21

गरजती टापें

(6:1-8)

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के रूपक और शब्दावली पश्चिमी जगत के शब्दकोष का हिस्सा बन चुके हैं। उदाहरण के लिए ''apocalypse'' (अपोकलिप्स) शब्द पर विचार करें। इसकी प्रसिद्ध परिभाषा ''बड़ा या पूर्ण विनाश'' है,[1] और भड़कीले समाचार पत्र अपनी सुर्खियों में इसी शब्द का इस्तेमाल करते हैं। अन्त समय बताने वाले भविष्यवक्ता संसार के अन्त की भविष्यवाणी करते हुए ''अपोकलिप्स'' शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

आमतौर पर सुना जाने वाला एक और शब्द ''आर्मिगद्दोन'' है जिसे ''विध्वंशकारी युद्ध'' या ''बुराई और भलाई की शक्तियों के बीच अन्तिम युद्ध'' तक माना जाता है। न्यूक्लीयर युद्ध नीति पर एक पुस्तक का नाम *द विज़र्ड्स ऑफ आर्मिगद्दोन* रखा गया था। प्रकाशितवाक्य से जुड़ा एक और शब्द है ''मिलेनियम'' जिसका अर्थ ''हज़ार वर्ष'' है। इक्कीसवीं शताब्दी के अन्त तक यह शब्द बहुत प्रसिद्ध हो गया था। आमतौर पर यह शब्द भयंकर अर्थ से जुड़ा होता है।

प्रकाशितवाक्य के अधिक प्रसिद्ध संकेतों में से एक अध्याय 6 वाले चार घुड़सवार हैं। संसार को स्व-विनाशकारी प्रवृत्तियों से सावधान करने पर एक पुस्तक लिखते हुए बिलीग्राहम ने इसे *अपरोचिंग हूफबीट्स: द फ़ोर हॉर्समेन ऑफ़ द अपोकलिप्स* अर्थात निकट आ रही टापें: अपोकलिप्स वाले चार घुड़सवार नाम दिया। विनसेंटि ब्लैस्को-इबैनेस के प्रसिद्ध युद्ध विरोधी नॉवल (बाद में जिस पर फिल्म भी बनी) का नाम *द फ़ोर हॉर्समैन ऑफ़ द अपोकलिप्स* रखा गया था। ऐसी पुस्तकें चार घुड़सवारों के बारे में कुछ नासमझी को दिखाती हैं, परन्तु इन से यह बात तो समझ आ ही जाती है कि वह रूपक आज भी आधुनिक मनुष्य से बात करता है। बूस मैज़गर ने कहा है:

> प्रकाशितवाक्य के बहुत कम अध्याय हैं, जो सीधे तौर पर हमारे समय के साथ बात करते हों। ... पुस्तकों में, समाचार पत्रों में, पत्रिकाओं के लेखों में, और रेडियो प्रसारणों में हम अपोकलिप्स के चार घुड़सवारों के बारे में पढ़ते और सुनते हैं, जो आज पूरी पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूम रहे हैं।[2]

इस पाठ में हम यूहन्ना के समय के लिए चार घुड़सवारों के सम्भावित अर्थों का पता लगाना चाहते हैं। अगले पाठ में हम इस पर चर्चा करेंगे कि यदि आज उन घुड़सवारों का हमारे लिए कोई महत्व है तो वह क्या है।

पूर्वाभास

अध्याय 5 की मुख्य बात मेमने द्वारा उससे, जो सिंहासन पर विराजमान है, मुहर की हुई पुस्तक लेना था (5:7)। 6:1 में यूहन्ना ने कहा, ''फिर मैंने देखा कि मेमने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला; और उन चारों प्राणियों में से एक का गरज का सा शब्द सुना,[3] कि 'आ' ''।[4]

यूहन्ना ने सोचा होगा कि पत्री में लिखी बात को या तो वह पढ़ेगा या कोई उसके लिए उन शब्दों को पढ़ेगा। उन शब्दों को पढ़ने या सुनने के बजाय उसने घोड़ों को दौड़ते देखा। वह पत्री सचित्र पुस्तक बन गई, जिसके चित्र उसके पन्नों से निकलकर यूहन्ना के दर्शन के चारों और गूंज रहे थे।[5] मुझे बचपन की एक ऐसी किताब याद आती है, जो उस समय बहुत प्रसिद्ध थी। इनमें से हर पुस्तक के पन्ने के ऊपरी कोनों में कार्टूनों की शृंखला होती थी। पन्नों को उंगली लगाने से ऐसा लगता था, जैसे कार्टून सजीव हों।

कुछ पहलुओं से, पहली चार मुहरों का संकेत उस समय के यहूदियों और मसीही लोगों के लिए नया नहीं था। घोड़े से आमतौर पर युद्ध के विचार ध्यान में आते थे। ''घोड़े युद्ध के लिए; बैल खेती के लिए और गधे यातायात के लिए होते थे।''[6] घोड़ों की संख्या और उनके अलग-अलग रंग का पुराने नियम के समय में भी महत्व था। जकर्याह 1:8-10 और 6:1-7 चार अलग-अलग रंगों वाले घोड़ों के बारे में बताते हैं, जिनका इस्तेमाल परमेश्वर की सेवा के लिए किया जाता था। परन्तु जकर्याह वाले घोड़ों और प्रकाशितवाक्य 6 वाले घोड़ों में महत्वपूर्ण अन्तर देखे जा सकते हैं।[7] अन्तिम विश्लेषण में, अपोकलिप्स के चारों घुड़सवार निराले ही थे।

कार्य!

विजय (6:1, 2)

पहली मुहर खुलने पर यूहन्ना ने देखा कि ''एक श्वेत घोड़ा है, और उसका सवार धनुष लिए हुए है: और उसे एक मुकुट दिया गया,[8] और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे'' (आयत 2)। (पहला घुड़सवार का चित्र देख।)

सवार के पास एक धनुष अर्थात एक हथियार था, जो सैनिक शक्ति का संकेत था (देखें भजन संहिता 46:9; यिर्मयाह 51:56; यहेजकेल 39:3, 9; होशे 1:5)। इस पहली मुहर का अधिकतर संकेत विजय की विषय-वस्तु से जुड़ा है: ''प्राचीन संकेतों में श्वेत घोड़े का अर्थ विजय होता था।''[9] सवार को दिया जाने वाला मुकुट राज करने वाला मुकुट *(diadema)* नहीं, बल्कि विजय का मुकुट *(stephanos)* था।[10] इसके अलावा ''जय करता हुआ'' और ''जय'' शब्द *nike* (''विजय'') के क्रिया रूप से लिए गए हैं।

क्या हमारे लिए इस विजयी घुड़सवार को पहचनाना सम्भव है ? यह तथ्य कि चौथे सवार को ''मृत्यु'' (6:8) के रूप में पहचाना गया, सुझाव देता है कि प्रत्येक सवार को नाम दिया जा सकता है। ऐसा होने पर हम पूछते हैं, ''तो फिर श्वेत घोड़े पर सवार किसे

या क्या दर्शाता है ?''[11]

कई साल पहले जब मैंने प्रकाशितवाक्य में से पढ़ाना आरम्भ किया था, मुझे निश्चय था कि यह सवार यीशु ही है। आखिर अध्याय 19 में श्वेत घोड़े पर मसीह ही दिखाई देता है। इस विचार को मानने वाले बहुत से लोग हैं और हो सकता है कि यह सही हो;[12] परन्तु समय के साथ मैं फ्रैंक पैक वाले निष्कर्ष पर ही पहुंचा हूं: ''इस घोड़े और सवार तथा 19:11 में वर्णित घुड़सवार में एक ही समानता ...घोड़े का रंग है।''[13] कुछ भिन्नताओं पर विचार करें:

पहला सवार (प्रकाशितवाक्य 6:2)	**यीशु** (प्रकाशितवाक्य 19:11-16)
एक मुकुट	बहुत से मुकुट (आयत 12)
विजय का मुकुट *(stephanos)*	राज मुकुट (*diadems*) (आयत 12)
उसके पास एक धनुष है	उसके पास एक तलवार है (आयत 15)
उसके पीछे तीन घुड़सवार हैं	उसके पीछे स्वर्ग की सेना है (आयत 14)
उसका नाम नहीं दिया गया	उसका नाम लिखा था (आयतें 11-13, 16)
वस्त्रों का उल्लेख नहीं	लहू में भीगा वस्त्र पहने हुए (आयतें 13,16)
जय करता हुआ	न्याय करता हुआ (आयतें 11, 15)

संदर्भ इस विचार के पक्ष में लगता है कि पहला सवार अन्य तीन सवारों के साथ पहचाना जाए, जो पृथ्वी पर छोड़ी गई विनाशकारी शक्तियों का आवश्यक भाग है। इस पर एक पल के लिए विचार करें: चारों सवारों का परिचय एक ही तरह चार प्राणियों के द्वारा दिया गया है। (चार प्राणियों ने अन्य किसी मुहर का परिचय नहीं दिया।) चारों घुड़सवारों ने स्पष्टतया एक-दूसरे के सहयोगी के रूप में एक इकाई की तरह काम किया। इसके अलावा ''चार'' ''वैश्विक अंक''[14] अर्थात इस पृथ्वी से जुड़ा अंक है, जो यह सुझाव देता है कि *चारों* सवार पृथ्वी के विनाश में सम्मिलित थे।[15]

मैं मानता हूं कि अध्याय 6 वाले श्वेत घोड़े के सवार को अध्याय 19 वाले श्वेत घोड़े के सवार (मसीह) से *भिन्न* दिखाने की कोशिश की गई है:[16] अध्याय 6 वाला घुड़सवार विजयी[17] *लग रहा* था, परन्तु यीशु *सचमुच* में विजयी होगा।[18]

अगर मैं सही हूं तो पहले सवार को क्या नाम दिया जा सकता है? ''साम्राज्यवाद'' या ''लालच'' कैसा रहेगा?[19] वैश्विक झगड़ा एक समूह द्वारा किसी दूसरे की चीज़ की लालसा के कारण होता है। लोभ स्पष्टतया विरोध का कारण होता है, जिससे झगड़ा उत्पन्न होता है। झगड़े के कारण की बात करते हुए, चाहे वह अन्तरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय या व्यक्तिगत हो, याकूब ने लिखा है, ''तुम में लड़ाइयां और झगड़े कहां से आ गए? क्या उन सुख-विलासों से नहीं, जो तुम्हारे अंगों में लड़ते-भिड़ते हैं'' (याकूब 4:1)। इस प्रकार पहले

सवार ने दूसरे सवार के लिए मंच तैयार कर दिया।

कोलाहल (6:3, 4)

> और जब उसने दूसरी मुहर खोली, तो मैंने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना, कि आ। फिर एक और घोड़ा निकला, जो लाल[20] रंग का था; उसके सवार को यह अधिकार दिया गया कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले, ताकि लोग एक-दूसरे का वध करें;[21] और उसे एक बड़ी तलवार[22] दी गई (आयतें 3, 4)। (दूसरा घुड़सवार का चित्र देख।)

हम श्वेत घोड़े के सवार की पहचान पर असहमत हो सकते हैं, परन्तु दूसरे सवार का नाम देने में हमें कोई समस्या नहीं होनी चाहिए: वह लहू जैसे लाल रंग के घोड़े पर सवार था, उसने पृथ्वी से मेल को उठा लिया, उसने लोगों को बिना निजी शत्रुता के एक-दूसरे की हत्या करने को उकसाया और उसने रोमी सेनाओं में प्रसिद्ध युद्ध की घातक तलवार को चलाया।

यह क्रूर और खून का प्यासा घुड़सवार है, जो राष्ट्रों का विनाश करता है, जो परिवार में एक खाली दाग छोड़ देता है, जो माताओं के दिलों को तोड़ देता है। *युद्ध* ही तो है,[23] जो बच्चों और अन्य निर्दोष लोगों सहित असंख्य लोगों का खतरनाक नाश करने वाला है।

परीक्षाएं (6:5, 6)

युद्ध का एक स्पष्ट परिणाम आर्थिक तंगी है।[24] इसलिए तीसरे सवार को भेजा गया:

> और जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना, कि आ: और मैंने दृष्टि की, और देखा, एक काला[25] घोड़ा है; और उसके सवार के हाथ में एक तराजू है। और मैंने उन चारों प्राणियों के बीच में से एक शब्द यह कहते सुना, कि दीनार का सेर भर[26] गेहूं, और दीनार[27] का तीन सेर जौ, और तेल, और दाख-रस की हानि न करना (आयतें 5, 6)। (तीसरा घुड़सवार का चित्र देख।)

इस सवार के पास असाधारण सामान था, जो अन्य घुड़सवारों के पास नहीं था: पहले घुड़सवार के पास धुनष था तो दूसरे के पास तलवार थी, परन्तु इस घुड़सवार के पास *तराजू* था, जो स्पष्टतया वहां बताए गए अनाज को तौलने के लिए था। भोजन को तौलने की आवश्यकता सीमित आपूर्ति का संकेत देती है (लैव्यव्यवस्था 26:26; यहेजकेल 4:16)। कम से कम आम आदमी की *पहुंच में* आ सकने वाली मात्रा सीमित थी, जैसा कि "दीनार का सेर भर गेहूं और दीनार का तीन सेर जौ" वाक्य से संकेत मिलता है।

दीनार आम मज़दूर को मिलने वाला एक दिन का वेतन (देखें मत्ती 20:2) और सेर गेहूं "एक दिन के लिए पेट भर खाने जितना" ही होगा।[28] इस प्रकार इसमें दिखाए गए कठिन समयों में एक श्रमिक उतना ही कमा सकता था, जितना अपने खाने के लिए खरीद

सके, यानी अपने परिवार के लिए नहीं बचा सकता था। परिवार वाले लोगों को जौ खरीदना पड़ता था। जौ घटिया अनाज होता था, जिसे केवल जानवरों के खाने या जानवरों की तरह रहने वालों को ज़बर्दस्ती खिलाने के योग्य माना जाता था,[29] परन्तु यह सस्ता था: एक दीनार का तीन सेर।

प्राचीन लेखकों के अनुसार यहां दी गई कीमत गेहूं और जौ के साधारण मूल्यों से आठ से सोलह गुणा अधिक बताई गई थी। तस्वीर अनियन्त्रित मुद्रा स्फीति की है।

जैतून के तेल और मय जैसे अन्य उत्पादों का क्या हुआ? आम लोग इन चीज़ों को नहीं खरीद सकते थे,[30] जो सम्भवतया ''तेल और दाखरस की हानि न करना'' की अस्पष्ट आज्ञा है।[31]

तीसरे घुड़सवार के देश में गरजने के समय आम कर्मचारी केवल अपने परिवार के पोषण के लिए सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम करते थे, जिसमें कपड़े, मकान या जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए कुछ नहीं बचना था! इस दशा को समझने के लिए कल्पना करें कि यदि करियाने तथा अन्य आवश्यक सामग्री की कीमत 1,600 प्रतिशत बढ़ जाए, परन्तु आपका वेतन उतना ही रहे तो निर्वाह करना कितना कठिन हो जाएगा!

क्लेश (6:7, 8)

हमने युद्ध के बाद की स्थिति अभी देखी नहीं है। चौथे घुड़सवार ने जो पीले घोड़े का खतरनाक सवार था अभी आना था:

> और जब उसने चौथी मुहर खोली, तो मैंने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना, कि आ। और मैंने दृष्टि की, और देखो, एक पीला सा घोड़ा है; और उसके सवार का नाम मृत्यु है: और अधोलोक उसके पीछे-पीछे है और उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई पर यह अधिकार दिया गया, कि तलवार, और अकाल, और मरी, और पृथ्वी के वन पशुओं के द्वारा लोगों को मार डालें[32] (आयतें 7, 8)। (चौथा घुड़सवार का चित्र देख।)

चौथे सवार का घोड़ा भयंकर रंग का था। ''पीला सा'' शब्द ''हरा'' के लिए यूनानी शब्द *chloros* का अनुवाद है। यह घोड़ा ''पीला हरा'' (NRSV) अर्थात लम्बे समय से पड़ी लाश का डरावना रंग था।

हरे घोड़े का भयानक सवार मृत्यु थी, जिसका काम अन्य सवारों द्वारा छोड़ी गई विकराल उपज को इकट्ठा करना था। मृत्यु के बिल्कुल पीछे अधोलोक अर्थात देह विहीन आत्माओं का निवास था।[33] अधोलोक को ''पांचवां घुड़सवार'' या अलग पहचान वाला न मानें। प्रकाशितवाक्य में हर जगह अधोलोक को मृत्यु के साथ जोड़ा गया है (1:18; 20:13,14)। दोनों मिलकर काम करते थे, मृत्यु तो शरीर पर दावा करती है, जबकि अधोलोक आत्मा पर।[34]

मृत्यु को आमतौर पर खोपड़ी वाले चेहरे के रूप में दिखाया जाता है। अधोलोक को

खुली कब्र या लड़खड़ाते पिशाची प्राणी, ''लंगड़ाता और अपनी एक टांग को घसीटता हुआ'' दिखाया जाता है।[35] मैं अधोलोक को मृत्यु के बिल्कुल पीछे खतरनाक काले बादल के रूप में, पीले सवार द्वारा गिराए जाने वाले सब लोगों को निगलने वाले, बड़े होते जा रहे एक भंवर के रूप में देखता हूं। दोनों मिलकर बहुत खतरनाक हो जाते हैं।

पहले तीन सवारों द्वारा छोड़ी गई उपज को काटने के अलावा मृत्यु और अधोलोक को ''तलवार,[36] और अकाल, और मरी,[37] और पृथ्वी के वन पशुओं[38] के द्वारा लोगों को मार'' डालने के लिए कहा गया। लड़ाई बंद होने पर युद्ध के परिणाम खत्म नहीं हो जाते। लड़ाई में मारे जाने वाले अन्तिम व्यक्ति के बाद बीमारी, भूख, और युद्ध भूमि में होने वाली हिंसा से अधिक लोग मारे जाते हैं।

हो सकता है कि मृत्यु के चारों कारक वही हों जो यरूशलेम को उसके पापों का दण्ड देने के लिए परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए गए थे। यहेजकेल 14 में उस भविष्यवक्ता को बताया था कि वह अपने ''चारों दण्ड अर्थात तलवार, अकाल, दुष्ट जन्तु, और मरी, जिनसे मनुष्य और पशु सब उसमें से नाश हों'' भेजेगा (आयत 21)। पाप का परिणाम अपने आप मिल जाता है। ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा'' (गलातियों 6:7)। यही बात किसी भी जाति या राष्ट्र के लिए सत्य है।

प्रासंगिकता?

स्पष्टतया चारों घुड़सवार किसी बड़ी समस्या को दर्शाते हैं। परन्तु क्या हमें उन सवारों तथा परमेश्वर की योजना का उद्देश्य और स्पष्ट हो सकता है?

कुछ लोग यह मानते हैं कि पहली चार मुहरों का उद्देश्य (यदि पूरा नहीं तो) रोमी साम्राज्य को दण्ड देने की परमेश्वर की योजना को प्रकट करना था। बुराई को दिए जाने वाले दण्ड को निकाला नहीं जा सकता,[39] परन्तु मुझे इस दर्शन पर दिए जाने वाले मुख्य ज़ोर पर संदेह है, क्योंकि (1) प्रकट की गई त्रासदियां अपने आप को हिंसक घुड़सवारों के रास्ते में आने वाले, रोमी हो या मसीही किसी भी व्यक्ति के लिए थीं।[40] (2)सवारों के तुरन्त बाद पांचवीं मुहर थी, जिससे शहीद हुए पवित्र लोग दिखाए गए जो पुकार रहे थे, ''... हे स्वामी ... तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा?'' (6:10)। यह मान लेना स्वाभाविक ही है कि ये लोग घुड़सवारों के लहूलुहान रास्ते में मारे गए थे।[41] (3) शहीदों के विवरण के बाद छठी मुहर है (6:12-17) जिसमें दुष्टों को दिए जाने वाले दण्ड के प्रति चिंता है, जो इस बात का संकेत है कि पिछली मुहरों में किसी और की बात थी।

इन सबको ध्यान में रखते हुए ऐसा लगता है कि चार घुड़सवारों की सामान्य व्याख्या पहली शताब्दी के मसीही लोगों द्वारा सही गई विरल समस्याओं की वास्तविकता की तुलना सब पर आने पाली त्रासदी से की जाए। इस पर मेरा विचार सम्पूर्णता से बहुत परे है पर फिर भी मैं अपना विचार देता हूं:

मनुष्य के लोभ (पहले घुड़सवार) के परिणामस्वरूप, क्लेश और परीक्षाओं

(दूसरे और तीसरे घुड़सवारों) को संसार में खुला छोड़ दिया गया। कष्टों के साथ क्लेश भी पापपूर्ण संसार में (चौथा घुड़सवार) जुड़ गए।

क्लेश, परीक्षाएं और पीड़ाएं सब लोगों का भाग हैं, परन्तु *मसीही* लोगों को इसका दोहरा भाग मिलता है यानी यीशु के अनुयायी को जीवन के सामान्य दुख सुख ही नहीं मिलते बल्कि उन्हें अपने विश्वास के कारण गलत समझा जाता है और अक्सर सताया जाता है।

एक उदाहरण के रूप में कि ''मसीही लोगों को दोहरा भाग मिलता है'' तीसरे घुड़सवार में पाई गई आर्थिक तंगी पर विचार करें: ''मसीही समाज के विरुद्ध इस्तेमाल किए गए मुख्य हथियारों में से एक उन्हें बाजार से निकालना अर्थात विरोध करने वालों को विश्वास से फिरने के लिए विवश करने की आर्थिक सुविधा।''[42]

प्रकाशितवाक्य में यीशु का संदेश सर्वप्रथम और मुख्य तथा ''अपने दासों'' के लिए था (1:1), जिस कारण मैं मानता हूं कि 6:1-8 में यीशु ने चाहा कि यूहन्ना और अन्य मसीही देख लें कि चारों घुड़सवार *उन्हें* लताड़ने की इच्छा से *उनकी* ओर भागे आ रहे हैं।

इस दृश्य को अपनी आंखों के सामने वैसे ही लाने की कल्पना करें, जैसे यूहन्ना को दिखाई दिया था। अपने मन में दौड़ने वाले चिकने घोड़ों की तस्वीर न बनाएं बल्कि ''अपने शरीर के अगले भाग और फूली हुई नथनों, अपने खतरनाक पेट से हवा को भरते और चीरते हुए''[43] युद्ध के खतरनाक घोड़ों की कल्पना करें। इसके अलावा याद रखें कि सवार ''ऐतिहासिक कालों के क्रम को नहीं दर्शाते।''[44] *क्रम* में दिखाई देने के बजाय वे *तर्कसंगत* क्रम में दिखाई देते है।[45]

फिर चार युद्ध घोड़ों के उन्मत्त सवारों के कहने से आपकी ओर भागते, चमकती आंखों और बाल हवा में उड़ते हुए *साथ-साथ* दौड़ने की कल्पना करें।[46] आपका मन माने तो उनके नथनों से निकलती गर्म सांसों से आपके मांस को काटते, आपकी हड्डियों को तोड़ते और आपके शरीर से प्राण निकालते महसूस करें।

अर्ल पाल्मर ने कहा है, ''अपोकलिप्स के इन चार घोड़ों और इनके सवारों से खतरनाक और डरावनी तस्वीर शायद ही कोई होगी।''[47] प्रकाशितवाक्य की अगली मुहरों को समझने के लिए आपके लिए उस आतंक को *महसूस* करना आवश्यक है। अपने आप को पहली शताब्दी के मसीही लोगों की जगह रखकर उनके द्वारा सहे गए खतरे को महसूस करें!

सारांश

अगले पाठ में हम चार घुड़सवारों पर यह विचार करते हुए कि वे आज भी हमारे जीवनों में कैसे असर डालते हैं, यह अध्ययन जारी रखेंगे, परन्तु अध्ययन समाप्त करने से पहले हमें यह पूछना आवश्यक है कि ''परमेश्वर ने ऐसे खतरनाक दर्शन से मसीही लोगों को अपना संदेश देना आरम्भ क्यों किया?'' मुहरों के खुलना आरम्भ होने पर यूहन्ना को शांति का संदेश मिलने की आशा होगी; परन्तु इसके बजाय उसे समस्याओं का ध्यान दिलाया गया। क्यों? हम परमेश्वर के दिमाग को नहीं जान सकते, परन्तु चार सवारों के

भेजे जाने के कुछ सम्भावित अर्थ मैं इस प्रकार बताता हूं।

(1) *मसीही लोगों को आने वाले समय के लिए तैयार करने के लिए।* मैं एक पुरानी अभिव्यक्ति ''सावधान करना हथियारबंद करना ही है'' से सहमत हूं।

(2) *यह जोर देने के लिए कि नियंत्रण अभी भी परमेश्वर के हाथ में है।* आठों आयतों को पढ़ें, उनमें ''आ!'' और ''दिया गया [या अनुमति मिली]'' वाक्यांशों को रेखांकित कर लें। घुड़सवारों ने ऐसा कुछ नहीं किया जो परमेश्वर ने उन्हें *करने* की अनुमति न दी हो।

(3) *यह जोर देना कि परमेश्वर मसीही लोगों की समस्याओं को सीमित कर देता है।* 1 कुरिन्थियों 10:13 इस बात पर जोर देता है कि परमेश्वर विश्वासी मसीहियों को उनकी सहनशक्ति से बाहर परीक्षा में नहीं पड़ने देता। ऐसा ही विचार सांकेतिक रूप में 6:8 में दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि मृत्यु और अधोलोक का अधिकार ''पृथ्वी की एक चौथाई'' तक सीमित किया गया था।[48] परमेश्वर उन लोगों पर बंदिश लगा देता है, जो हमें प्रताड़ित करते हैं।

(4) *यह समझाना कि जो कुछ भी होता है चाहे वह हमें ''अच्छा'' लगे या ''बुरा,'' सब में परमेश्वर का हाथ होता है।* 6:1-8 के सबसे महत्वपूर्ण सबकों में से यह एक है। परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए काम कर रहा था। अगले पाठ तथा उससे अगले पाठों में हम इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे, परन्तु अध्ययन से यह सच्चाई पहले ही स्पष्ट हो जानी चाहिए। परमेश्वर को मालूम है कि वह क्या कर रहा है! हमारे सामने उस पर भरोसा रखना सीखने की चुनौती है![49]

टिप्पणियां

[1]इस पाठ में अंग्रेज़ी शब्दों की परिभाषाएं *अमेरिकन हैरिटेज इलैक्ट्रॉनिक डिक्शनरी,* तीसरा संस्करण (1992) से ली गई हैं। याद रखें कि डिक्शनरियों या शब्दकोषों में *इस्तेमाल होने वाली* परिभाषाएं ही दी गई होती हैं, आवश्यक नहीं कि वे *बाइबल के आधार* पर हों। [2]ब्रूस एम.मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले, अबिंग्डन प्रैस, 1993), 59. [3]अन्य प्राणियों को ''दूसरा'' (4:3), ''तीसरा'' (4:5) और ''चौथा'' (4:7) कहा गया है सो स्पष्ट है कि ''पहला प्राणी सिंह के समान'' था (4:7)। (चारों के विवरणों के लिए 4:7 देखें।) [4]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''आकर देख'' है (देखें KJV), जिससे यह लगता है कि यूहन्ना को सम्बोधित किया गया था, परन्तु पूर्ण रूप में हस्तलेख का प्रमाण केवल ''आ'' का समर्थन करता है, जो सम्भवतया घुड़सवारों को दी गई आज्ञा थी। [5]यह वाक्य बिली ग्राहम, *अप्रोचिंग हूफ़बीट्स: द फ़ोर हॉर्समैन आफ़ द अपोकलिप्स* (न्यू यॉर्क: एवन बुक्स, 1985), 71 से लिया गया था। [6]यूजीन एच. पीटरसन, *रिवर्सड थंडर* (सैन फ्रैंसिस्को: हार्परकोलिंस पब्लिशर्स, 1988), 74. [7]जकर्याह वाले घोड़े रथ खींच रहे थे जबकि प्रकाशितवाक्य 6 में घोड़ों के सवार थे। जकर्याह वाले घोड़े एक खबर लाए थे जबकि प्रकाशितवाक्य वाले घोड़े विनाश लाए। तीसरा अन्तर रंगों का है: प्रकाशितवाक्य में रंगों का सम्बन्ध अलग-अलग घुड़सवारों द्वारा लाई गई तबाही की किस्म से है। [8]आयत 2 का रूपक पारथी घुड़सवारों का स्मरण कराता है, जिन्हें तीरों और मुकुटों के साथ दिखाया गया था। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''रोम का प्रतिद्वंद्वी : पारथ'' लेख देखें।) कुछ लोगों का मानना है कि यह प्रतीक इस बात की

भविष्यवाणी है कि रोम पारथियों के हाथों सताया जाएगा; अन्य का मानना है कि यह रूपक *किसी भी* विजयी शक्ति को दर्शाता है, चाहे वह पारथ हो या रोम या कोई और विजयी कौम। [9]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* भाग 1 (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 64. जेम्स एम. एफिर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रेस, 1989), 70 भी देखें। [10]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में मुकुटों पर नोट्स देखें।

[11]इस पाठ में मैंने श्वेत घोड़े के सवार के परिचय के सम्बन्ध में दो सम्भावनाएं बताई हैं, या तो यीशु या विजयी/शाही संकेत क्योंकि मेरा मानना है कि यही सम्भावनाएं हैं। और सुझाव भी दिए गए हैं। उदाहरण के लिए ''निरंतर ऐतिहासिक'' ढंग मानने वालों ने इस घुड़सवार को एक विशेष ऐतिहासिक चरित्र के रूप में पहचानने का प्रयास किया है। (इस ढंग की कमज़ोरियों पर चर्चा के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में देखें।) ''भविष्यवादी'' ढंग को मानने वाले (प्रीमिलेनियलिस्ट) लोग आमतौर पर इस घुड़सवार को ''मसीह विरोधी'' मानते हैं (जिसे वे कोई विशेष व्यक्ति समझते हैं), इस तथ्य के बावजूद कि वचन में कहीं यह सुझाव नहीं मिलता। (भविष्यवादी ढंग की कमज़ोरियों पर चर्चा के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में देखें।) पहले घुड़सवार को विशेष ऐतिहासिक व्यक्ति बताने का कोई भी प्रयास (यीशु के अलावा) अपोकलिप्टिक भाषा की उपेक्षा करता है। [12]इसके ज़बर्दस्त समर्थन का सार विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन, बेकर बुक हाउस, 1954), 113–17 में मिल सकता है। [13]पैक, 64. [14]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''चार'' के सांकेतिक अर्थ की चर्चा देखें। [15]इस विचार के समर्थन में कि श्वेत घोड़े का सवार मसीह नहीं था और भी तर्क दिए गए हैं। उदारहण के लिए मेमने (मसीह) के लिए पहली मुहर तोड़ना और फिर तुरन्त श्वेत घोड़ पर सवार होकर निकल जाना असंगत लगता है। [16]अध्याय 19 में मसीह के श्वेत घोड़े पर दिखाई देने पर यूहन्ना ने ''देखता हूं'' (आयत 11) शब्द का इस्तेमाल किया जिससे आश्चर्य और उत्सुकता का पता चलता है। यह अधिक सम्भावना है कि यूहन्ना ने यीशु को दोबारा विजय के श्वेत घोड़े पर सवार होते देखने के बजाय पहली बार देखकर उत्सुक और चकित होना था। [17]प्रकाशितवाक्य दुष्ट शक्तियों को विजय मिलने की बात कहने से हिचकिचाता नहीं है (उदाहरण के लिए देखें 13:7); यानी चाहे थोड़ी देर के लिए ही थी, लेकिन थी यह विजय। [18]अपनी बात कह लेने के बाद मुझे पहले सवार को यीशु मानने या न मानने पर हठधर्मी होने के विरुद्ध चौकस करना आवश्यक है कि पहला सवार यीशु है या नहीं। दोनों ही बातों के पक्ष के लिए उपयुक्त समर्थन मिल सकता है और दोनों ही ओर भले लोग और प्रतिष्ठित विद्वान हैं। कोई जिस भी बात को माने, मूल निष्कर्ष वही रहेगा। चार घुड़सवारों का दर्शन विश्वासी मसीही बनने की कठिनाई को घोषित करता है! मसीही व्यक्ति *पहले* सवार से आरम्भ करें या *दूसरे* सवार से, दोनों में मुख्य अन्तर यही है। [19]''साम्राज्यवाद'' की परिभाषा शब्दकोष में ''किसी देश के क्षेत्र पर कब्ज़ा करने या दूसरे देशों पर आर्थिक और राजनैतिक [प्रभाव] को बढ़ाने की नीति'' के रूप में की जाती है। परन्तु मेरे ध्यान में, *देश* द्वारा हो या *व्यक्ति* द्वारा, यह *दूसरों पर नियन्त्रण करने की इच्छा* है। [20]''लाल'' उस यूनानी शब्द का अनुवाद है, जिसका इस्तेमाल ''आग'' के लिए होता है। CEV में "fiery red" है।

[21]अनुवादित ''वध'' का यूनानी शब्द वही है जिसका अनुवाद 5:6, 9, 12 में ''वध किया हुआ'' हुआ है। CEV में ''ताकि लोग एक-दूसरे का वध करें'' है। [22]''तलवार'' 1:16 और 2:12 वाले अनुवादित शब्द ''तलवार'' से अलग है। यहां इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द *machaira* है जो रोमी सेना द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली खुखरी के लिए है। इस तलवार को आकार के कारण ''बड़ा'' नहीं कहा जाता था (पोम्पई के खण्डहरों में मिले *मचाइरा* केवल साढ़े उन्नीस इंच लंबे और दो इंच चौड़े हैं), बल्कि इस कारण कहा जाता था क्योंकि यह रोम की सैनिक विजयों में एक महत्वपूर्ण कारक था। मचाइरा याजकों द्वारा बलिदान के इस्तेमाल किए जाने वाली छुरी जैसी आड़ी तलवार नहीं थी, जैसा कि कइयों का मानना है। [23]वचन ''एक-दूसरे'' को कत्ल करने की बात बताता है जिस कारण कुछ लोगों का विचार

रोमी तलवार और म्यान

है कि यहां विशेषकर *गृह* युद्ध की बात है। गृहयुद्ध सबसे खतरनाक किस्म का युद्ध है, क्योंकि इसमें भाई-भाई के विरुद्ध हो जाता है।[24]युद्ध से उजड़े देशों में रहने वाले लोग इस बात की यथार्थता की पुष्टि कर सकते हैं। बेशक युद्ध कहीं और लड़ा जाने पर किसी देश की कुछ समय के लिए आर्थिक उन्नति हो जाएगी (जिसमें मुट्ठी भर लोग धनवान बन जाएंगे)। परन्तु युद्ध से अन्ततः धन, समय और देश की आंतरिक समस्याओं को सुलझाने के प्रयास बिगड़ जाते हैं और देश मुसीबत में घिर जाता है।[25]पवित्र शास्त्र में काले रंग को विशेषकर शोक और दुख से जोड़ा गया है (यशायाह 50:3; यिर्मयाह 4:28; 14:2; KJV)। रंग को कई बार भोजन की कमी से जोड़ा जाता था (यिर्मयाह 14:1, 2; विलापगीत 5:10; KJV), जैसा कि इस पद्य में है।[26]अनुवादित शब्द ''सेर''(''माप''; KJV) का यथार्थ अनुवाद कठिन है। नये नियम के समय के माप आमतौर पर वही नहीं हैं जो आज के समय में इस्तेमाल किए जाते हैं, इसके अलावा आज के माप अलग-अलग देशों में अलग-अलग पाए जाते हैं। (उदाहरण के लिए, बर्तानवी साम्राज्य में ''Quart'' (सेर) का अर्थ वही नहीं है, जो अमेरिका में है।) हमारे लिए इतना सोचना ही काफी है कि यह कोई माप था, जो उस ''सेर'' से जहां आप रहते हैं, अलग था।[27]''दीनार'' यूनानी शब्द का लिप्यंतरण है। KJV में ''penny'' है, परन्तु NKJV में "denarius" है।[28]डब्ल्यू.ई.वाइन, *द एक्पोंडिड वाइन 'स डिक्शनरी आफ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपादन जॉन आर. कोहेल्नगर्गर III विद जेम्स ए.स्वैन्सन (मिनियापोलिस, मिनेसोटा: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 724. यह शब्द एक अनाम प्राचीन अधिकारी शायद हेरोदोतस से लिए गए हैं।[29]भीड़ को खिलाने के समय यीशु ने एक लड़के के दोपहर के भोजन का इस्तेमाल किया था जिसमें जौ की रोटियां थीं (यूहन्ना 6:9)। इससे उस लड़के के परिवार की आर्थिक स्थिति के बारे में कुछ पता चल सकता है।[30]स्पष्टतया यह भोजन की कमी का अकाल नहीं था। जो लोग खरीद सकते थे उनके लिए भोजन उपलब्ध था।

[31]कुछ लोगों का विचार है कि इस आज्ञा से संकेत मिलता है कि यह तेल और दाखरस की बहुतायत वाले दर्शन का भाग है, जबकि वहां अनाज की कमी थी। यूजीन पीटरसन ने इसे ''पर जितना भी तेल और दाखरस तुम्हें चाहिए'' कहा है (*द मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद साम्स एंड प्रोवर्ब्स* [कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995], 618)। [32]आयत 8 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''मार डालें'' वही शब्द नहीं है जिसका अनुवाद आयत 4 में ''वध करें'' किया गया है। (KJV दोनों आयतों में "kill" है।) इससे यह संकेत मिल सकता है कि ये मौतें मसीही लोगों विशेष पर होने वाले सताव का उतना परिणाम नहीं हैं जितना यह कि आम लोगों द्वारा उनके साथ दुर्व्यवहार का। [33]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में 1:8 पर टिप्पणियां देखें। [34]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 5'' में ''न्याय के विषय में पांच बातें जो आपको पता होनी चाहिए'' पाठ में मृत्यु और अधोलोक पर नोट्स देखें। [35]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनेशनल बिब्लिकल रिसोर्सेस, 1976), 102. [36]आयत 8 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''तलवार'' वही शब्द नहीं है जिसका अनुवाद आयत 4 में ''बड़ी तलवार'' किया गया है। (देखें टिप्पणी 22.) यह तलवार युद्ध वाली बड़ी तलवार थी। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में 1:16 और 2:12 पर टिप्पणियां देखें।) [37]अनुवादित शब्द ''मरी'' ''मृत्यु'' के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द ही है (देखें KJV)। पुराने लोगों द्वारा असंख्य लोगों को मार डालने वाली मरी के लिए आमतौर पर ''मृत्यु'' शब्द का इस्तेमाल किया जाता था जैसे काली मौत (ताऊन), लाल मौत (चेचक), सफेद मौत (टीबी)। आयत 8 में ''मृत्यु'' और ''मार डालें'' शब्दों का पहले ही इस्तेमाल हुआ है जिस कारण मृत्यु शब्द यहां कई तरह की महामारी के लिए है। [38]बाइबल के समयों में नगरों के विनाश के बाद आमतौर पर जंगली जानवरों की भरमार हो जाती थी और उस इलाके पर उनका कब्जा हो जाता था (यिर्मयाह 9:11; 10:22; 49:33; 50:39)। [39]जैसा कि हम देखेंगे, रोम को चेतावनी देने और दण्ड देने के लिए सात तुरहियों और सात कटोरों के क्रम में ऐसी विपदाओं का इस्तेमाल किया गया। [40]याद रखें कि ''चार'' वैश्विक अंक अर्थात मनुष्य जाति का अंक है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''चार'' के सांकेतिक अर्थ पर चर्चा देखें।) किसी हद तक सब लोग चारों घुड़सवारों द्वारा प्रभावित होते हैं।

[41]इस बात से कि 6:4 वाला ''वध'' शब्द वही है जिसका इस्तेमाल 5:6, 9, 12 में यीशु की मृत्यु और 6:9 में शहीदों की मृत्यु के विवरण के लिए किया गया है, यह संकेत दे सकता है कि 6:4 का अर्थ यीशु के

उन अनुयायियों के लिए ही है, जिन्हें वध किया जा रहा था। [42]एफिर्ड, 71. *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 3'' में 13:17 पर टिप्पणियां देखें। [43]ग्राहम, viii. [44]एकोल्स, 72. [45] साम्राज्यवाद से युद्ध होता है, युद्ध से आर्थिक तंगी आदि। [46]ब्रायन वाट्स द्वारा बनाई चारों घुड़सवारों की तस्वीरें देखें। [47]अर्ल एफ.पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एंड रैवलेशन,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 177. [48]''पृथ्वी की एक चौथाई'' लोगों की बहुत संख्या जैसा लगता है, परन्तु याद रखें कि हम मृत्यु की बात कर रहे हैं। अन्ततः मरना *सब* ने है। बेशक प्रकाशितवाक्य के संकेतवाद में ''एक चौथाई'' का मुख्य अर्थ ''सभी नहीं'' है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''चार'' के सांकेतिक अर्थ पर चर्चा देखें।) [49]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो सुनने वालों को अपना भरोसा *आज्ञापालन* के द्वारा व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें (मत्ती 7:21; मरकुस 16:16; लूका 6:46; प्रेरितों 2:38)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आपने समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में कभी ''अपोकलिप्स,'' ''आर्मिगद्दोन,'' ''मिलेनियम'' या ''चार घुड़सवार'' शब्द देखे हैं? क्या मीडिया में आम तौर पर इन शब्दों का इस्तेमाल सही अर्थ में होता है?
2. जकर्याह 1 और 6 वाले घोड़ों की तुलना प्रकाशितवाक्य 6:1-8 वाले घोड़ों से करें। उनमें क्या-क्या समानताएं हैं? उनमें क्या भिन्नताएं हैं?
3. पहले घोड़े का सवार पारथी घुड़सवारों जैसा कैसे था? (''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''रोम का प्रतिद्वंद्वी: पारथ'' लेख देखें।)
4. श्वेत घोड़े के सवार के रूप में मसीह के पक्ष तथा विपक्ष में तर्कों पर चर्चा करें।
5. ''साम्राज्यवाद'' शब्द से लेखक का क्या अर्थ है? (टिप्पणियां देखें।)
6. लाल घोड़े और इसके सवार से क्या पता चलता है?
7. काले घोड़े और इसके सवार से क्या पता चलता है?
8. ''दीनार'' क्या होता था? ''दीनार का सेर भर गेहूं, और दीनार का तीन सेर जौ'' वाक्य का क्या अर्थ है?
9. यहां दिखाई गई मुद्रा स्फीति आपने कभी अनुभव की है या आप और किसी को जानते हैं, जो ऐसी मुद्रा स्फीति से गुजरा हो? इसके बारे में बताएं।
10. पीले घोड़े और इसके सवार से क्या संकेत मिलता है?
11. मृत्यु और अधोलोक मिलकर कैसे काम करते हैं?
12. मृत्यु और अधोलोक द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले चार कारकों पर चर्चा करें।
13. यहेजकेल 14:21 का संदर्भ पढ़ें और ''यरूशलेम के विरुद्ध'' परमेश्वर के ''चार कठोर न्यायों'' का अर्थ बताने को तैयार रहें।
14. पाठ के अनुसार चार घुड़सवारों वाले दर्शन के *सामान्य* और *विशेष* बल क्या हैं
15. पाठ के अनुसार परमेश्वर ने आतंक के इन विवरणों वाली मुहरें खोलना आरम्भ क्यों किया? क्या आप अन्य सम्भावित कारणों पर विचार कर सकते हैं?

अपोकलिप्स वाले चार घुड़सवार

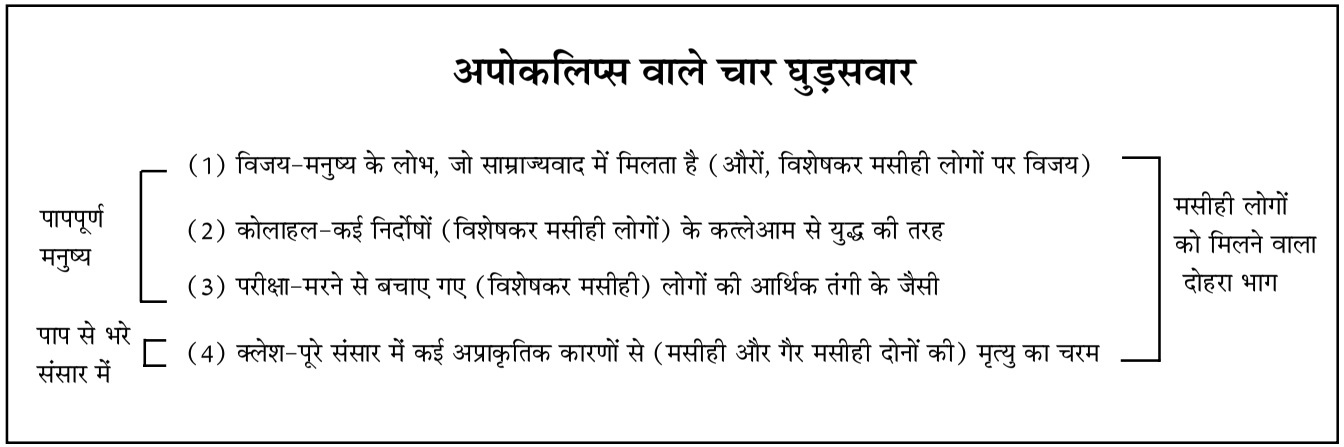

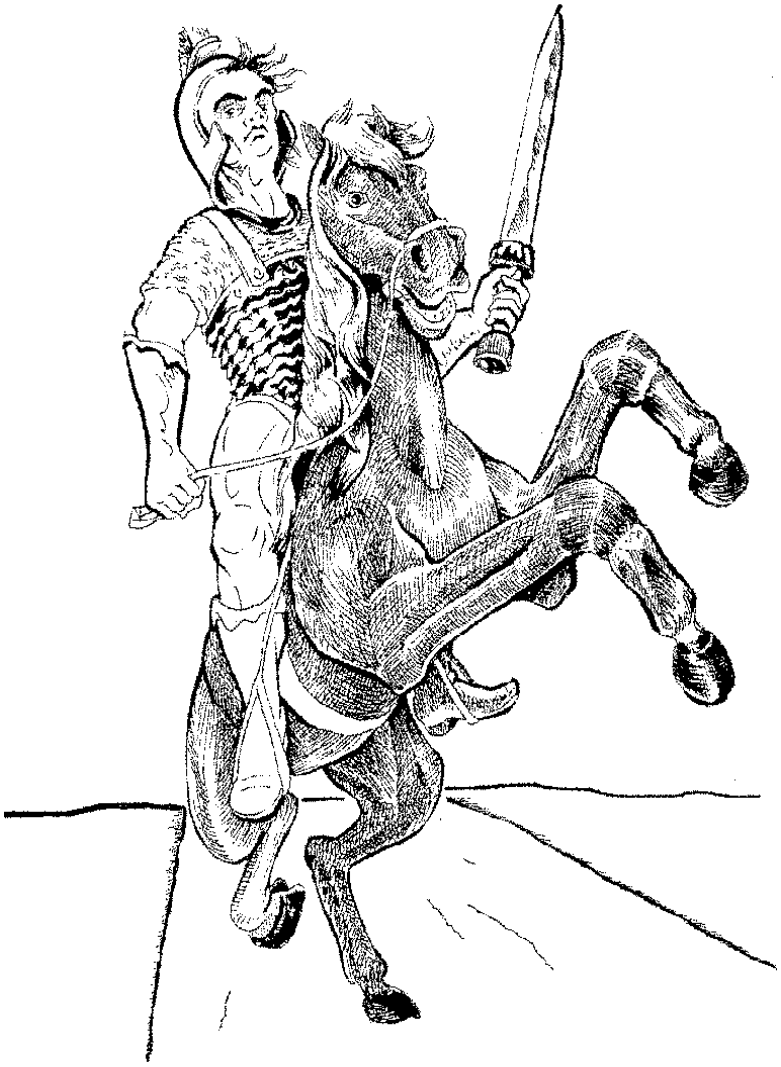

दूसरा सवार (6:3, 4)

तीसरा सवार (6:5)

चौथा सवार (6:7, 8)